Toppersnotes
Unleash the topper in you

REET

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Board of Secondary Education, Rajasthan

Level – I

भाग – 2 (ब)

संस्कृत

SIERRA INNOVATIONS

REET LEVEL – 1

CONTENTS

संस्कृत

1.	माहेश्वर सूत्र	1
	• वर्ण विचार उच्चारण स्थान	3
2.	सन्धिप्रकरणम्	6
3.	समास प्रकरण	17
4.	प्रत्यय	22
5.	छन्दः शास्त्र परिचय	35
6.	अव्यय प्रकरण	42
7.	शब्द रूप	46
8.	सर्वनाम रूप	54
9.	धातु रूप	58
10.	उपसर्ग (प्रादयः)	71
11.	वाच्य परिवर्तन	73
12.	सूक्तियाँ	75
13.	संख्या ज्ञानं/विशेषण–विशेष्य भाव	78
14.	समयज्ञानम्	85
15.	अलंकार	92
16.	प्रश्न निर्माण	95
17.	अशुद्धि संशोधन	97
18.	हिन्दी–संस्कृत अनुवाद	99
19.	विलोमार्थी शब्द	104
20.	पर्यायवाची शब्द	111
21.	वचन	114
22.	कारक	116
23.	राजस्थान के संस्कृत साहित्यकारों का योगदान	124

संस्कृत शिक्षा विधि

1.	संस्कृतशिक्षण विधयः	133
2.	नवीन विधियाँ/आधुनिक विधियाँ	140
3.	व्याकरणशिक्षणम्	150
4.	गद्यशिक्षणम्	157

प्रत्यय

प्रत्यय – प्रतीयते विधीयते इति प्रत्ययः

प्रत्ययों के मुख्यतः तीन भेद होते हैं –

1. कृत प्रत्यय
2. तद्धित प्रत्यय
3. स्त्री प्रत्यय

कृत प्रत्यय

- कृत प्रत्ययों में से 7 प्रत्यय 'कृत्य प्रत्यय' कहलाते हैं –
  1. तव्यत्
  2. तव्य
  3. अनीयर्
  4. केलिमर्
  5. यत्
  6. क्यप्
  7. ण्यत्
- अव्यय बनाने के लिए धातुओं में – क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्।
- धातु से विशेषण बनाने के लिए – शतृ, शानच, तव्यत्, अनीयर्, यत्।
- भूतकालिक क्रिया के प्रयोग के लिए – क्त, क्तवतु, (तव्यत्, अनीयर, यत् करना चाहिए – क्रिया के वाचक)
- धातु से संज्ञा बनाने हेतु – तृच्, क्तिन, ण्वुल्, ल्युट्, आदि प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता हैं।
- तव्यत् प्रत्यय में से त् का लोप होने पर 'तव्य' शेष रहता है।
- अनीयर् प्रत्यय का 'अनीय' शेष रहता है।
  इन प्रत्ययों का प्रयोग 'कर्मवाच्य' या 'भाववाच्य' में ही किया जाता है।

1. तव्यत् प्रत्यय

यथा –	पठितव्यः	पठितव्या	पठितव्यम्
	पठनीयः	पठनीया	पठनीयम्

2. अनीयर् प्रत्यय

	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
कृ + अनीयर्	करणीयः	करणीया	करणीयम्
क्री + अनीयर्	क्रयणीयः	क्रयणीया	क्रयणीयम्

3. तुमुन् प्रत्यय – इस प्रत्यय में अन्तिमं अक्षर न् का लोप हो जाने पर 'तुम्' शेष रहता है। तुमुन् प्रत्यय से बना अव्यय होता है।

यथा –	गम् + तुमुन्	–	गन्तुम्
	दृश + तुमुन	–	द्रष्टुम्
	मुच + तुमुन	–	मोक्तुम्
	जि + तुमुन	–	जेतुम्

4. **ण्वुल् प्रत्यय –** कर्ता अर्थ में धातु से ण्तुल् प्रत्यय का योग किया जाता है 'ण्वुल्' में 'वु' शेष रहता है, वु के स्थान पर 'अक' हो जाता है।

यथा –	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
कृ + ण्वुल् –	कारकः	कारिका	कारकम्

गम् – गमकः

पच् – पाचकः

प्र + आप् – प्रापकः

5. **तृच प्रत्यय** – तृच का 'तृ' शेष रहता है और 'च्' का लोप हो जाता है।

यथा –	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
	कर्ता	कर्त्री	कर्तृ
क्री –	क्रेतृ	क्रेता	
दा –	दातृ	दाता	
पठ –	पठितृ	पठिता	

6. **यत् प्रत्यय –** यत् में 'य' शेष रहता है व धातु में गुण हो जाता है।

यथा – नी – नेयम्

चि – चेयम्

क्री – क्रेयम्

श्रु – श्रव्यम

श्रि – श्रेयम्

नोट – ऋकारान्त धातुओं से 'यत्' नहीं लगता हैं।

- आकारान्त धातु के आ के स्थान पर ईत् (ई) हो जाता है, यत् प्रत्यय परे रहते तथा ई का ए गुण हो जाता है।

यथा – दा – देयम्

घ्रा – घ्रेयम्

पा – पेयम्

धा – धेयम्

स्था – स्थेयम्

प वर्गान्तर धातुएँ जिनकी उपधा में ह्रस्व अकार हो, से भाव और कर्म में यत् प्रत्यय होता है।

यथा – शप् – शप्यम्

वप् – वप्यम्

नम् – नम्यम्

7. ण्यत् प्रत्यय – ण्यत् में 'य' शेष रहता है। ण्यत् से पूर्व ऋ की वृद्धि हो जाती है। योग्य अर्थ बताने के लिए 'ण्यत्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

यथा – कार्यः	कार्या	कार्यम्
मृज्	मार्ग्यः	
स्मृ	स्मार्यम्	
ग्रह	ग्राह्यम्	

8. क्यप् प्रत्यय

- इण (इ), स्तु, शास, वृ, दृ और जुष् धातु से भाव और कर्म में 'क्यप्' प्रत्यय होता है।
- 'चाहिए' व 'योग्य' अर्थ में क्यप् प्रत्यय होता है तथा क्यप् में य शेष रहता है।
- धातु को तुक् का आगम होता है क्यप् प्रत्यय रहते है। तुक् का 'त्' शेष रहता है।

यथा –	इण – इत्यः	आदृ – आदृव्यः
	वृ – वृत्यः	जुष् – जुष्यः
	वृष् – वृष्यम्	दृश् – दृश्यः
	शास् –शिष्यः	रुच् – रुच्यम्
	स्तु – स्तुत्यः	

9. शतृ एवं शानच प्रत्यय – परस्मैदी धातुओं में शतृ का प्रयोग किया जाता है। शतृ के श् और ऋ का लोप होकर धातु में 'अत्' जुड़ता है।

- आत्मनेपदी धातुओं में शानच् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। शानच् के श् और च् का लोप होकर धातु के साथ आन जुड़ता है तथा म् आगम् होकर कही–कहीं 'मान' जुड़ता है।

यथा –	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
पठ् + शतृ (अत्)	पठन	पठन्ती	पठत्
सेव् + शानच् (मान्)	सेवमानः	सेवमाना	सेवमानम्
वृत् + शानच् (मान्)	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्
हस् + शतृ (अत्)	हसन्	हसन्ती	हसत्

- परस्मैपदी धातु में –

कृ – कुर्वन
गम् – गच्छन्
भ्रम – भ्रमन्
दृश् (पश्च) – पश्यन्
इष् (इच्छ) – इच्छन्
पा (पिब्) – पिबन्

- आत्मनेपदी धातु में –

कृ – कुर्वाणः
लभ् – लभमानः
वृध –वर्धमानः
दा – ददानः
यज् – यजमानः

10. क्त एवं क्तवतु प्रत्यय

- किसी कार्य की समाप्ति का ज्ञान कराने के लिए अर्थात् भूतकाल के अर्थ में क्त और क्तवतु प्रत्यय का होते हैं।
- क्त प्रत्यय धातु से भाववाच्य या कर्मवाच्य में होता है और इसका 'त' शेष रहता है।
- क्तवतु प्रत्यय कर्तृवाच्य में होता है और इसका 'तवत्' शेष रहता है।
- क्त और क्तवतु के रूप तीनों लिंगों में चलते है।

यथा – गम् + क्तवतु – गतवान्   गतवती   गतवत्

गम् + क्त –   गतः   गता   गतम्

धातु	**क्त**	**क्तवतु**
अर्च्	अर्चितः	अर्चितवान्
विकृ	विकृतः	विकृतवान्
स्मृ	स्मृतः	स्मृतवान्
व्यज्	व्यक्तः	व्यक्तवान्
स्था	स्थितः	स्थितवान्

- **क्त प्रत्ययान्त रूप**

परि त्यज्	–	परित्यक्तः
हन्	–	हतः
पच्	–	पक्वः
भिद्	–	भिन्नः
गम्	–	गतः
नी	–	नीतः

- **क्तवतु प्रत्ययान्त रूप**

परित्यज्	–	परित्यक्तवान्
पठ्	–	पठितवान्
दश्	–	दृष्टवान्
आनी	–	आनीतवान्
पा	–	पीतवान्
पृछ	–	पृष्टवान्
भुज्	–	भुक्तवान्

11. क्त्वा प्रत्यय

- क्त्वा प्रत्यय में से क् का लोप होकर केवल त्वा शेष रहता है।
- सेट धातुओं में 'इ' जुड़ता है। इ केवल वही जुड़ता है जहाँ क्रिया में इ के जोड़ें जाने की आवश्यकता होती है।
- क्त्वा और ल्यप् प्रत्यय वाले शब्द अव्यय हो जाते है। अतः इनका एक ही रूप होता है।

यथा – धृ – धृत्वा

नम् – नत्वा

पी – पीत्वा

गम् – गत्वा

भू – भूत्वा

पठ् – पठित्वा

लिख् – लिखित्वा

गा – गीत्वा

चल् – चलित्वा

श्रु – श्रुत्वा

12. ल्यूट् प्रत्यय

- भाववाचक संज्ञा बनाने में ल्यूट् प्रत्यय होता है नपुंसकलिग में।
- ल्यूट का 'यु' शेष रहता है। यु के स्थान पर 'युवोरनाकौ' सूत्र से 'अन' आदेश होता है।

यथा – धृ – धरणम्

कृ – करणम्

चि – चयनम्

पठ् – पठनम्

ग्रह – ग्रहणम्

भृ – भरणम्

लिख् – लेखनम्

13. घञ् प्रत्यय

- घञ् प्रत्यय का 'अ' शेष रहता है और इसके रूप पुल्लिंग में ही होते है।
- धातु को गुण या वृद्धि होती है।
- ण्यत्, घञ् प्रत्यय होने की स्थिति में धातु के च् को 'क्' तथा ज् के स्थान पर 'ग्' हो जाता है।

यथा – त्यज् – त्यागः

रम् – रामः

प्र + वह् – प्रवाहः

युज् – योगः

14. क्तिन् प्रत्यय – क्तिन् का 'ति' शेष रहता है तथा धातु के गुण, वृद्धि न होकर सम्प्रसारण होता है। क्तिन् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिंग में होते हैं। इनके रूप मति के समान चलते है।

यथा – मन् – मतिः
गा – गीतिः
सम् + कृ – संस्कृति
धृ – धृतिः
वच् – उक्तिः
भी – भीतिः
जन् – जातिः

तद्धित प्रत्यय – जिन प्रत्ययों का प्रयोग संज्ञा, सर्वनाम, आदि शब्दों के बाद किया जाता है। वे 'तद्धित प्रत्यय' कहलाते है।

यथा – उपगु + अण् – औपगवः

किसी वस्तु का समूह अर्थ बताने के लिए उस वस्तु में अण् प्रत्यय होता हैं।

यथा – मर्कट + अण् – मार्कटम्

मनुष्यम् + अण् – मानुष्यम्

(1) मतुप प्रत्यय

- 'वाला' अर्थ में शब्दों से मतुप् प्रत्यय होता है।
- मतुप् में 'उप्' का लोप होकर शब्दों से केवल 'मत्' जुड़ता है।
- अकारान्त और आकारान्त शब्दों में मतुप् प्रत्यय जोड़ने पर 'म' के स्थान पर 'व' हो जाता है। (मत् = वत्)

यथा – रस – रसवान्
बल – बलवान्
धी – धीमान्
गो – गोमान्

(2) त्व, तल् प्रत्यय – भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए शब्दों से 'त्व' और 'तल्' (ता) प्रत्ययों का योग किया जाता है। त्व प्रत्यान्त शब्द नित्य नपुंसकलिंग (त्वम्) और तल् प्रत्ययान्त शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग (तल् = ता) में होते हैं।

यथा – शब्द	त्व प्रत्ययान्त	प्रत्ययान्त
मनुष्य	मनुष्यत्वम्	मनुष्यता
मूर्ख	मूर्खत्वम्	मूर्खता
विद्वस्	विद्वत्वम्	विद्वता

(3) मयट् प्रत्यय – 'विकार' और 'अवयव' के अर्थ में 'मयूट्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। मयट् में से टकार का लोप हो जाने पर 'मय' शेष रहता है।

यथा – भस्म + मयट् – भस्ममयम्

सुवर्ण + मयट् – सुवर्णमयम्

(4) तमप् प्रत्यय – बहुतों में से एक को श्रेष्ठ या निकृष्ठ बताने के लिए शब्द के साथ तमप् प्रत्यय जोड़ा जाता है। तमप् में 'तम' शेष रहता है।

यथा –			
चतुर + तमप्	चतुरतमः	चतुरतमा	चतुरतमम्
गुरु + तमप्	गुरुतमः	गुरुतमा	गुरुतमम्
मधु + तमप्	मधुरतमः	मधुरता	मधुरतमम्

(5) तरप् प्रत्यय – दो वस्तुओं में से एक को श्रेष्ठ या निकृष्ठ बताने के लिए शब्द में 'तरप्' प्रत्यय जोड़ा जाता है।

- तरप् में 'तर्' शेष रहता है।

  यथा – चतुर + तरप् – चतुरतरः चतुरतरा चतुरतरम्

  मृदु + तरप् – मृदुतरः मृदुतरा मृदुतरम्

(6) इनि प्रत्यय – अकारान्त शब्दों में 'वाला' या 'युक्त' अर्थ में 'इनि' और 'ठन्' प्रत्यय का होते हैं।

- इनि का 'इन्' और 'ठन्' का 'ठ' शेष रहता है।

  यथा – दण्ड + इनि – दण्डिन् दण्डी

  बल + इनि – बलिन् बली

स्त्री प्रत्यय – पुल्लिंग शब्दों में जिन प्रत्ययों को लगाकर स्त्रीलिंग या स्त्रीवाचक शब्द बनाये जाते है, उन्हें स्त्री प्रत्यय कहते हैं।

ये 8 प्रकार के होते है –

1. आ (टाप् , डाप् , चाप् ,)
2. ई (ङीप्, ङीष्, ङीन्)
3. ऊङ
4. ति

(1) **टाप् प्रत्यय –** टाप् का 'आ' शेष रहता है –

यथा – अश्व + टाप् – अश्वा

ज्येष्ठ + टाप् – ज्येष्ठा

खट्व + टाप् – खट्वा

नोट – यदि पुल्लिंग शब्द के अन्त में 'अक्' हो तो आ (टाप्) प्रत्यय लगने पर 'इक' हो जाता है।

यथा – मूषक + टाप् – मूषिका

नायक + टाप् – नाकिा

(2) **ङीप् प्रत्यय –** शतृ, मतुप, क्त्वतु प्रत्ययान्त युक्त शब्दों में 'ङीप्' प्रत्यय होता है। ङीप् का 'ई' शेष रहता है।

यथा – भवत् + ङीप् – भवती (भवन्ती)

श्रीमत् + ङीप् – श्रीमती

कामिन् + ङीप् – कामिनी (शब्दों से स्त्रीलिंग में (ङीप्) प्रत्यय होता है।

नोट – अनुपसर्जन जो टित् आदि तदन्त जो अदन्त प्रतिपादिक उससे स्त्रीलिंग में ङीप् होता है।

देवट् + ङीप् – देवी

नदत् + ङीप् – नदी

वैनतेय + ङीप् – वैनतेयी

नोट – प्रथम अवस्थावाची अकारान्त पुल्लिंग शब्दों से स्त्रीलिंग में 'ङीप्' प्रत्यय होता है।

यथा – कुमार + ङीप् – कुमारी

चिरण्ट + ङीप् – चिरण्टी

नोट – अदन्त द्विगु समास के शब्दों में ङीप् प्रत्यय होता है।

यथा – त्रिलोक + ङीप् – त्रिलोकी

शताब्द + ङीप् – शताब्दी

(3) **ङीष् प्रत्यय –** जिसका षकार इत्संज्ञक हो ऐसे प्रतिपादकों से तथा गौर आदि शब्दों से पठित प्रतिपादकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय होता है। ङीष् का ई शेष रहता है।

यथा – नर्तक + ङीष् – नर्तकी

गौर + ङीष् – गौरी

साधु + ङीष् – साध्वी

तनु + ङीष् – तन्वी

(4) **ति प्रत्यय –** युवन् शब्द से स्त्रीलिंग में 'ति' प्रत्यय होता है।

यथा – युवन + ति् – युवतिः

Toppersnotes
Unleash the topper in you

प्रत्यय के अन्य महत्वपूर्ण उदाहरण

धातु	तव्यत्	अनीयर्
गम्	गन्तव्यः	गमनीयः
मन्	मन्तव्यः	मननीयः
ज्ञा	ज्ञातव्यः	ज्ञानीयः
दृश्	द्रष्टव्यः	दर्शनीयः
मुञ्चु	मोक्तव्यः	मोचनीयः
रक्ष्	रक्षितव्यः	रक्षणीयः
प्रच्छ्	प्रष्टव्यः	प्रच्छनीयः
अस्	भवितव्यः	भवनीयः
लभ्	लब्धव्यः	लभनीयः
भिद्	भेत्तव्यः	भेदनीयः

तुमुन प्रत्यय

पठ् – पठितुम्
कृ – कर्त्तुम्
मुद् – मोदितुम्
अस् – भवितुम्
गृह – गृहीतुम्
क्रुध – क्रोद्धुम्
ज्ञा – ज्ञातुम्
दा – दातुम्
ब्रू – वक्तुम्
पा – पातुम्
लभ् – लब्धुम्

ण्वुल् प्रत्यय

हन् – घातकः
वद् – वादकः
छिद् – छेदकः
कृ – कारकः
धा – धायकः
भिद् – भेदकः
दह् – दाहकः
गम् – गमकः
जन् – जनकः
नी – नायकः
दृश् – दर्शकः

तृच् प्रत्यय

वह् – वोढा
पठ् – पठिता
सृज – स्त्रष्टा
भुज् – भोक्ता
हन् – हन्ता
श्रु – श्रोता
क्री – क्रेता
पच् – पक्ता
हृ – हर्ता
भिद् – भेत्ता
प्रच्छ् – प्रष्टा
गम् – गन्ता

यत् प्रत्यय

शप् – शप्यम्
पा – पेयम्
ध्यै – ध्येयम्
लभ् – लभ्यम्
गै – गेयम्
भू – भव्यम्
क्री – क्रेयम्
ज्ञा – ज्ञेयम्

धा — धेयम्

हन् — वध्यः

सह — सह्मम्

श्रु — श्रव्यम्

जि — जेयम्

ण्यत् प्रत्यय

मृज् — मार्ग्यः

कुप् — कोप्यम्

ह्र — हार्यम्

दुह — दोह्मः

पच् — पाक्यः

याच् — याच्यम्

ऋ — आर्यः

वद् — वाद्यम्

वच् — वाक्यम्/वाच्यम्

यज् — याज्यम्

शतृ प्रत्यय

क्रीड् — क्रीडन्

वद् — वदन्

पत् — पतन्

पा — पिबन्

गम् — गच्छन्

श्रु — श्रृण्वन्

त्यज् — त्यजन्

वस् — वसन्

स्था — तिष्ठन्

हन् — हनन्

कुप् — कुप्यन्

कृ — कुर्वन्

शानच् प्रत्यय

कम्प् — कम्पमानः

मुद् — मोदमानः

जन् — जायमान्

कृ — कुर्वाणः

ज्ञा — जानानः

शी — शयान्

ब्रू — ब्रुवाणः

भुज् — भुञ्जनः

नी — नयमानः

क्री — क्रीणान्

कत्वा प्रत्यय

क्रुध् — क्रुद्ध्वा

हन् — हत्वा

अस् — भूत्वा

वद् — उदित्वा

धा — हसित्वा

क्री — क्रीत्वा

दा — दत्वा

गम् — गत्वा

क्षिप् — क्षित्वा

क्त प्रत्यय, क्तवतु प्रत्यय

मन्	मतः	मतवान्
जि	जितः	जितवान्
हृ	हृतः	हृतवान्
शिक्ष्	शिक्षितः	शिक्षितवान्
क्रीड्	क्रीडितः	क्रीडितवान्
दृश	दृष्टः	दृष्टवान्
लभ्	लब्धः	लब्धवान्

प्रच्छ्	पृष्टः	पृष्टवान्
दह्	दग्धः	दग्धवान्
अद्	जग्धः	जग्धवान्
रच्	रचितः	रचितवान्
हा	हीनः	हीनवान्
सह्	सोढः	सोढवान्
चुर्	चोरितः	चोरितवान्
प्राप्	प्राप्तः	प्राप्तवान्
छिद्	छिन्नः	छिन्नवान्
धा	हितः	हितवान्
हस्	हसितः	हसितवान्
रम्	रतः	रतवान्
हन्	हतः	हतवान्

ल्यूट् प्रत्यय

भृ – भरणम्
विद् – वेदनम्
सह् – सहनम्
मुद् – मोदनम्
रक्ष् – रक्षणम्
गम् – गमनम्
लिख् – लेखनम्
हस् – हसनम्
दुह् – दोहनम्
त्यज् – त्यजनम्
रूद् – रोदनम्
ज्वल् – ज्वलनम्
स्था – स्थानम्

घञ् प्रत्यय

कुप् – कोपः
बुध – बोधः
मुह् – मोहः
तृ – तारः
नि – न्यायः
शम् – शमः
युज् – योगः
मृज् – मार्गः
धृ – धारः
वद् – वादः
हृ – हारः
हस् – हासः
पच् – पाकः

क्तिन् प्रत्यय

वृध् – वृद्धिः
स्तु – स्तुतिः
भी – भीतिः
रम् – रतिः
कृ – कृतिः
भ्रम् – भ्रान्तिः
बुध् – बुद्धिः
गम् – गतिः
यम् – यतिः
रूह् – रूढिः

मतुप प्रत्यय

ऊर्मि – ऊर्मिमान्
श्री – श्रीमान्
धी – धीमान्

पुत्र	–	पुत्रवान्
रस्	–	रसवान्
ज्ञान्	–	ज्ञानवान्
बुद्धि	–	बुद्धिमान्
भूमि	–	भूमिमान्
गो	–	गोमान्
स्पर्श	–	स्पर्शवान्

त्व, तल् प्रत्यय

प्रभुः	प्रभुत्वम्	प्रभुता
सम	समत्वम्	समता
जन	जनत्वम्	जनता
दीर्घ	दीर्घत्वम्	दीर्घता
पटु	पटुत्वम्	पटुता
पशु	पशुत्वम्	पशुता
मृदु	मृदुत्वम्	मृदुता
पवित्र	पवित्रत्वम्	पवित्रता
देव	देवत्वम्	देवता
मग	ममत्वम्	ममता

तमप् प्रत्यय, तरप् प्रत्यय

कृश	कृशतमः	कृशतरः
बहु	बहुतमः	बहुतरः
क्षुद्र	क्षुद्रतमः	क्षुद्रतरः
दूर	दूरतमः	दूरतरः
प्रिय	प्रियतमः	प्रियतरः
पशु	पशुतमः	पशुतरः
मृदु	मृदुतमः	मृदुतरः
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतमः	श्रेष्ठतरः
पटु	पटुतमः	पटुतरः

इनि प्रत्यय

ज्ञान	–	ज्ञानिन्
पाप	–	पापिन्
दण्ड	–	दण्डिन्
योग	–	योगिन्
धन्	–	धनिन्
मन्त	–	मन्तिन्

टाप् प्रत्यय

अज्	–	अजा
बाल	–	बाला
सर्व	–	सर्वा
कनिष्ठ	–	कनिष्ठा
धावक	–	धाविका
पाठक	–	पाठिका
मेध	–	मेधा
वृद्ध	–	वृद्धा
अश्व	–	अश्वा
खट्व	–	खट्वा
सरल	–	सरला
चटक	–	चटका
बालक	–	बालिका

ङीप् प्रत्यय

कर्तृ	–	कर्त्री
भवत्	–	भवती
इन्द्र	–	एन्द्री
कीदृश	–	कीदृशी
अक्ष	–	अक्षिकी
भरत	–	भारती

श्रीमत् – श्रीमती

नदट् – नदी

सुपर्णा – सौपर्णेयी

तादृश – तादृशी

नेतृ – नेत्री

ङीष् प्रत्यय

गुरु – गर्वी

हिम – हिमानी

रुद्र – रुद्राणी

इन्द्र – इन्द्राणी

ब्राह्मण – ब्राह्मणी

गौर – गौरी

मृदु – मृद्वी

तनु – तन्वी

पृथु – पृथ्वी

दाक्षि – दाक्षी

कुन्ति – कुन्ती

लधु – लध्वी

छन्दः शास्त्र परिचय

शतपथब्राह्मण में 'रसो वै छन्दांसि' कह कर छन्द की रागात्मिका अनुभूति और अभिव्यक्ति की ओर संकेत किया गया है ।

छन्दशास्त्र प्रमुख आचार्य–

छन्दशास्त्र के प्रवर्तक भगवान शिव माने जाते हैं। पिंगल कृत छन्दः सूत्र के भाष्य यादव प्रकाश में इस छन्दशास्त्र का ज्ञान शिव से बृहस्पति को, बृहस्पति से दुश्च्यवन को, दुश्च्यवन से इन्द्र को, इन्द्र से माण्डव्य को, माण्डव्य से पिंगल को प्राप्त हुआ। पाणिनि शिक्षा की 'शिक्षाप्रकाश' नामक टीका के अनुसार 'छन्दशास्त्र' का रचयिता पिंगल, पाणिनि के अनुज थे। इनके परवर्ती आचार्यों में कालिदास की श्रुतबोध, क्षेमेन्द्र की सुवृत्ततिलक, केदारभट्ट की वृत्तरत्नाकर और गंगादास की छन्दोमञ्जरी प्रमुख है। आचार्य परम्परा के सम्बन्ध में यह श्लोक स्मरणीय है–

छन्दोज्ञानमिदं भवाद् भगवतो लेभे सुराणां गुरुः
तस्माद् दुश्च्यवनस्ततो सुरगुरुर्माण्डव्यनामा ततः ।
माण्डव्यादपि सैतवस्तत ऋषिर्यास्कस्ततः पिंगलः
तस्येदं यशसा गुरोर्भुवि धृतं प्राप्यास्मदाद्यैः क्रमात् ॥

पाणिनिशिक्षा की 'शिक्षाप्रकाश' नामक टीका के अनुसार 'छन्दःशास्त्र' के रचयिता पिंगल, वैयाकरण पाणिनि का अनुज था। पिंगल के छन्दःशास्त्र में अग्रेलिखित पूर्वाचार्यों का उल्लेख है– अग्निवेश्य, अंगिरस, काश्यप, कौशिक, कौष्टुकि, गौतम, तण्डिन, भार्गव, माण्डव्य, यास्क, रात, वशिष्ठ, सैतव। छन्दशास्त्र के प्राचीन आचार्य 'पिंगल' का 'छन्दसूत्र' रचना है। इनका समय ई.पू. पाँचवी शताब्दी माना जाता है। इन्हें समुद्र तट पर मगर ने मार डाला। पिंगल मुनि को पिंगलनाग तथा पिंगलाचार्य भी कहा जाता हैं।

छन्दः शास्त्र का महत्व

छन्दयति पृणाति रोचते इति छन्दः।
जिस वाणी को सुनते ही मन आह्लादित हो जाता है, वह वाणी ही छन्द है।
छन्दः पादौ तु वेदस्य। हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
छन्द को वेद का पाद (चरण) कहा गया है।
वेदांगों में इसका प्रमुख स्थान है।

- **छन्द का लक्षण**
  अक्षर परिमाण को छन्द कहते हैं। छन्दशास्त्र में वर्ण, मात्रा, यति, गति, क्रम के विशेष नियमों से बनी हुई पदबन्ध रचना को छन्द कहते हैं। अग्निपुराण में चार चरण वाली रचना को पद्य कहा है।
- **छन्द का प्रकार या भेद**
  छन्द पद्य, गद्य, गेय, भेद से तीन प्रकार का है, अतः छन्दःशास्त्र पद्यकाण्ड, गद्यकाण्ड, गेयकाण्ड भेद से त्रिकाण्डात्मक है। यद्यपि बहुत से विद्वान् गद्यसमूह में छन्दोव्यवस्था नहीं मानते हैं क्योंकि उनमें कोई छन्द की मर्यादा नहीं है तथापि उनमें किसी छन्द का न होना को ही छन्द मानकर छन्दों का व्यवहार माना जाता है।
  अग्निपुराण में पद्य के दो भेद किये हैं – वृत्त और जाति ।
  गंगादास ने भी वृत्त और जाति भेद को स्वीकार किया है।
  वृत्तरत्नाकर में छन्द के दो भेद हैं कृवैदिक और लौकिक। पुनः लौकिक छन्द के दो भेद दृवार्णिक और मात्रिक किया गया है। इनमें वार्णिक को वृत्त एवं मात्रिक को जाति कहा है। नियत वर्ण व्यवस्था से निष्पन्न छन्द वृत्त कहलाता है तथा नियत मात्रा व्यवस्था से निष्पन्न छन्द जाति कहलाता है।

नारायण के अनुसार

पद्यं चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा।
वृत्तमक्षरसंख्यातं जातिर्मात्राकृता भवेत्।।

हलायुध के अनुसार

पद्यं चतुष्पदं तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा।
एकदेशस्थिता जातिवृत्तं लघुगुरुव्यवस्थितम्॥
अर्थात् वृत्त में लघुगुरुव्यवस्था होती है तथा जाति में मात्राव्यवस्था ।
छन्दःशास्त्र में वृत्त के तीन भेद बताये हैं – सम, अर्धसम एवं विषम।
आर्या छन्द मात्रावृत्त है।
सम, अर्धसम एवं विषम वृत्त

समवृत– जिस छन्द में चारों चरणों के लक्षण समान हों वह समवृत्त कहलाता है। इसे सर्वसम भी कहा जाता है।

अर्धसमवृत्त – जिस छन्द के प्रथम और तृतीय चरण तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में समान अक्षर हों, वह अर्धसमवृत्त कहलाता है।

विषम/सर्वविषम वृत्त – जिस छन्द के चारों चरणों के लक्षण विभिन्न हों, वह विषमवृत्त कहलाता है । इनकी गणना लघुगुरु वर्णों के आधार पर होती है।

पाद या चरण

पाद का अर्थ एक भाग या हिस्सा होता है। इसे ही पद या चरण कहते हैं। छन्दों में प्रायः चार या छः पाद होते हैं। प्रत्येक पाद में मात्राओं की संख्या और उनका क्रम नियत होता है।
चरणों के भेद – सम या युग्म, विषम या अयुग्म ये दो चरणों के भेद हैं।
प्रथम, तृतीय एवं पञ्चम चरण 'विषम' कहे जाते हैं । द्वितीय, चतुर्थ एवं षष्ठ चरणों को 'सम' कहते हैं।
लघु तथा गुरु के आधार पर वर्णों की गणना होती है। वर्णों की गणना करने पर ही हम जान पाते हैं कि कौन सा पद्य या श्लोक किस छन्द में है। वर्णों की गणना करने के लिए वर्णों तथा मात्राओं की जानकारी आवश्यक है। उसके आधार पर हम पद्य या श्लोक में वर्णों/मात्राओं की गणना कर सकेंगें।

वर्ण या अक्षर

त्रिषष्टिः चतुःषष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः।
प्राकृते संस्कृते वापि स्वयं प्रोक्ताः स्वयंभुवा।।
योविंशतिरुच्यन्ते स्वराः शब्दार्थचिन्तकैः।
द्विचत्वारिंशद् व्यञ्जनान्येतावान् वर्णसंग्रहः।।

अ, इ, उ, ऋ स्वर वर्णों के ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत भेद होते है। लृ का ह्रस्व तथा प्लुत भेद होता है। ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः मिश्रित स्वर हैं । ये दो ह्रस्व वर्ण के मिश्रण से बनते हैं। जैसे– अ और इ के मिश्रण से ए, आ और ई के मिश्रण से ऐ, अ और उ के मिश्रण से ओ तथा आ और ऊ के मिश्रण से औ बनता है। अतः इसका ह्रस्व नहीं होकर केवल दीर्घ और प्लुत ही होता है । ञ, ण, न, म आदि व्यंजन वर्ण जब अनुस्वार में बदल जाते हैं तब यह दीर्घ हो जाता है। क् + ष से 'क्ष', त् + र से 'त्र' और ज् + ञ से 'ज्ञ' भी बना है। स्वरों की संख्या 21 है। स्वर सहित व्यंजन मिलाकर 63 अक्षर होते हैं। इन्हीं में एक अर्धचन्द्र शामिल करने से 64 वर्ण हो जाते हैं।
उक्त के अनुसार स्वर व व्यंजन दोनों वर्ण हैं। वर्ण व अक्षर समानार्थक हैं।
स्वर के ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत ये तीन भेद होते हैं।
छन्दोवेद में अक्षर वर्ण से भिन्न है। 'वागित्येकमक्षरम्, अक्षरमिति व्यक्षरम्'–ऐतरेय ब्राह्मण
छन्दःशास्त्र की जानकारी के लिए वर्णों की मात्रा का ज्ञान अति आवश्यक है। स्वर वर्णों में ह्रस्व वर्ण को मात्रा कहते है। छन्द में स्वर वर्ण की ही गणना की जाती हैं। व्यंजनों की आधी मात्रा होती है परन्तु इसकी मात्रा नहीं गिनी जाती। मात्रा को मत्ता, मत्त, कला और कल भी कहते हैं।

मात्रा

किसी अक्षर के उच्चारण में व्यतीत होने वाले समय से उस अक्षर की मात्रा का बोध होता है। ह्रस्व स्वर के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है। इसे ह्रस्व स्वर को लघु कहा जाता है। दीर्घ मात्रा वाले अक्षर के उच्चारण में लघु मात्रा के अक्षर से दुगुना समय लगता है। व्यंजन की अर्धमात्रा होती है। इस प्रकार लघु (ह्रस्व) स्वर की एक मात्रा है। दीर्घ या संयुक्त स्वरों की दो मात्राएँ होती हैं।

संयोगादि, सानुस्वार तथा सविसर्ग स्वर गुरु होता है। यद्यपि संयुक्त व्यञ्जन से पूर्व का अक्षर गुरु माना जाता है किन्तु रेफ संयुक्त व्यञ्जन वाले ह्र, प्र, ध्र, ग्र आदि से पूर्व के ह्रस्व अक्षर का यदि एकमात्रा से उच्चारण किया जाता है तो वह गुरु नहीं होता और दो मात्रा से उच्चारण किया जाता है तो गुरु होता है । यह व्यवस्था छन्द के अनुरोध से है।

उदाहरण – वक्त्र में व् + अ + क् + त् + र् + अ हैं। इसमें चार व्यञ्जन एवं दो स्वर हैं, यहाँ इसकी दो ही मात्रा है,क्योंकि छन्द में व्यंजन की मात्रा नहीं गिनी जाती। इसी प्रकार ज्ञान में ज् + ञ् + आ + न + अ हैं। इसमें तीन मात्राएँ हैं। राजा में + आ + ज् + आ की चार मात्राएँ हैं। ज्ञान तथा राजा में आ दीर्घ स्वर वर्ण है। इसमें केवल स्वर वर्ण ही गिना जायेगा। इस प्रकार हम जान चुके कि किसी पद के वर्णों की गणना करते समय उसके स्वर वर्ण की ही गणना की जाएगी तथा उसमें यह देखना है कि वह स्वर ह्रस्व है या दीर्घ। ह्रस्व तथा दीर्घ के आधार पर हम मात्राओं का निर्धारण कर सकेंगे।

संख्या – मात्राओं और वर्णों की गणना को संख्या कहते हैं। इनका मूल आधार ह्रस्व एवं दीर्घ तथा प्लुत वर्ण होते हैं। ह्रस्व वर्णों को लघु तथा दीर्घ वर्णों को गुरु कहते हैं।

किस छन्द में कितनी मात्राएँ हों या कितने वर्ण हों यह उनकी संख्या है। जैसे– अनुष्टुप् छन्द के एक चरण में 8 वर्ण तथा चारों चरण मिलाकर 32 वर्ण होते हैं। इसी संख्या के आधार पर हम आगे अलग–अलग छन्दों के बारे में विस्तार से पढ़ेंगे।

क्रम – लघु गुरु के स्थान सम्बन्धी नियम को क्रम कहते हैं अर्थात् कहाँ पर लघु हो और कहाँ पर गुरु हो इस नियम को क्रम कहते हैं।

लघु–गुरु विचार – छन्द शास्त्र में से गुरु का तथा प् से लघु का ज्ञान होता है। कहाँ गुरु होगा कहाँ लघु उसके लिए छन्दशास्त्र में नियम हैं।

त्रिक या गण

तीन अक्षरों के संयोग को त्रिक या गण कहते हैं। इन गणों से वर्णों की संख्या एवं क्रम का ज्ञान हो जाता है । छन्द के चरणों में लघु गुरु वर्णों का स्थान और परिमाण नियत होता है। छन्दों में वर्णों की संख्या एवं क्रम का की जानकारी के लिए 'यमाताराजभानसलगाः' इस सूत्र का उपयोग किया जाता है। इसके य से लेकर ता तक का एक त्रिक या गण बनता है। पुनः मा से लेकर रा तक का एक त्रिक या गण बनता है। इसमें ह्रस्व (लघु) तथा दीर्घ (गुरु) वर्ण के लिए प्रयुक्त होने वाले चिह्न को इस तरह दिखाया जा रहा है।

। ऽ ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ

'यमाताराजभानसलगाः'

इस सूत्र के आधार पर आठ त्रिकों (गणों) का ज्ञान होता है। इस सूत्र में कुल दस अक्षर हैं। इस सूत्र को 'पिंगल दशाक्षर' भी कहते हैं।

इन आठ त्रिकों (गणों) के अलग–अलग नाम हैं। सूत्र के अन्त में आये ल से लघु, ग से गुरु का बोध होता है।

'यमाताराजभानसलगाः' से बनने वाले अधोलिखित त्रिकों को भली भाँति देखकर समझ लें। छन्द के लक्षण में इन्हीं त्रिकों के नाम आयेंगें। इसके आधार पर पद्यों/ श्लोकों में त्रिकों की गणना होगी।

क्रम सं.	त्रिक नाम	चिह्न	वर्ण रूप	
1	यगण	। ऽ ऽ	यमाता	आदिलघु
2	मगण	ऽ ऽ ऽ	मतारा	सर्वगुरु
3	तगण	ऽ ऽ ।	तराज	अन्त्यलघु
4	रगण	ऽ । ऽ	राजभा	मध्यलघु
5	जगण	। ऽ ।	जभान	मध्यगुरु

6	भगन	S । ।	भानस	आदिगुरु
7	नगण	। । ।	न्सल	सर्वलघु
8	सगण	। । S	सलगाः	अन्त्यगुरु

यति
बड़े–बड़े छन्दो में जहाँ एक चरण में इतने अधिक अक्षर हों कि उनका एक श्वास में उच्चारण करना कठिन है। उनकी लय को ठीक करने के लिए एक–एक चरण में एक से अधिक यति होती है। इसे ही विच्छेद, विभाजन, विश्राम, विराम अथवा अवसान कहते हैं। पद्य को पढ़ते समय जहाँ पर जिह्वा को विश्राम दिया जाता है, उस स्थान को यति कहते हैं। श्लोक के चरण के अन्त में यति होना आवश्यक है। छन्द के लक्षण में वर्णों की संख्या, उसके क्रम के साथ यति का भी निर्देश प्राप्त होता है। जैसे– विद्युन्माला छन्द में 4–4 वर्ण पर यति का नियम है। आवश्यकतानुसार यति न लगाने पर यतिभंाग दोष होता है।

श्लोकों/पद्यों के गायन के नियम
गति – छन्दशास्त्र में लय या पाठ प्रवाह को गति कहते हैं। मात्राओं एवं वर्णों की संख्या पूरी होने पर भी गति या लय के अभाव में छन्द नहीं बनता। किसी श्लोक की गति का अभ्यास अपने गुरु से अथवा किसी मान्य वेबसाइट / गायक से सीखा जा सकता है। यह अभ्यास पर निर्भर है। इस प्रकार किसी पद्य या श्लोक के सही उच्चारण के लिए छन्दःशास्त्र के नियम के अनुसार यति लेना चाहिए तथा किसी गुरु से इसके गति या प्रवाह एवं नाद को सुनकर उच्चारण करना चाहिए। याद रखें श्लोकों को पढ़ा नहीं बल्कि गाया जाता है। हर श्लोक का अलग– अलग लय होता है। प्रत्येक छन्द का अपना रस होता है। रस तथा भाव का सम्मिश्रण करते हुए निर्धारित यति तथा गति के साथ श्लोक का गायन करना सीखें।

तुक – चरण के अन्त में स्वर सहित वर्णों की आवृति को तुक कहते हैं। तुक के प्रयोग से काव्य कर्णप्रिय एवं कमनीय हो जाता है। उत्तम तुक में पाँच मात्राएँ, मध्यम तुक में चार मात्राएँ एवं अधम तुक में तीन मात्राएँ होती हैं। दो मात्राओं का तुक त्याज्य मानते हैं। तुक के बारे में यथा स्थान विस्तार से चर्चा होगी।

संख्या के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द

एक – चन्द्र		दो – नेत्र
तीन – काल		चार – वेद
पाँच – तत्व		छः – ऋतु
सात – ऋषि		आठ – वसु
नव – ग्रह		दस – दिशा
ग्यारह – रूद्र		बारह – मास

• प्रमुख छन्दों से परिचय

क्रम	छन्द का नाम	लक्षण	संख्या यति
1	अनुष्टुप्	श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम्। द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः।।	32 विषमवृत्त
2	विद्युन्माला	मो मो गो गो विद्युन्माला।	8 यति 4,4 पर
3	इन्द्रवज्रा	स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।	11 समवृत्त
4	उपेन्द्रवज्रा (उपजातिः)	उपेन्द्रवज्रा प्रथमे लघौ सा।। अनन्तरोदीरित लक्ष्मभाजौ, पादौ यदीया–वुपजातयस्ताः।	11 समवृत्त
5	शालिनी	शालिन्युक्ता म्तौ तगौ गोऽब्धिलोकैः।	11 यति 4,7
6	रथोद्धता	रान्नराविह रथोद्धता लगौ।	11 पादे यति
7	वंशस्थ	जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।	12 पादे यति